कविता शिक्षण और पढ़ना

ओम प्रकाश विश्वकर्मा

शुरुआती कक्षाओं में भाषा शिक्षण में कविता की भूमिका से हम सभी परिचित हैं। कक्षा में कविता अलग-अलग तरह से खुलती हुई नज़र आती है। इस लेख में कविता पर बच्चों के साथ काम करने के अनुभव हैं। शिक्षक बताते हैं कि उन्होंने अलग-अलग स्तर के बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने का काम किया, और उस काम में कविता काफ़ी मददगार साबित हुई। इस काम के लिए उन्होंने क्या तैयारी की, यह भी वे बताते हैं। -सं.

कविता ही क्यों ?

बच्चों को कविताएँ सुनना रुचिकर लगता है। वे ख़ासकर ऐसी कविताएँ सुनना पसन्द करते हैं जिनमें उनका जाना-पहचाना सन्दर्भ, परिवेश होता है, जिनमें तुकबन्दी और लय होती है, और जो समझने में सहज होती हैं। मैंने अपनी कक्षा में कई कविताओं पर काम किया था। इनसे मैं बच्चों के लिए समझकर पढ़ने के अवसर गढ़ना चाह रहा था। बच्चों को पढ़ना-लिखना सीखने के साथ ही उन्हें अनुभव साझा करने, अपनी बात जोड़ने, और भाषा विकास के मौक़े भी उपलब्ध हों, यह मेरी कोशिश थी। कविता पर काम करते हुए मेरे मन में एक और योजना थी कि बच्चों को कविता के आधार पर सोचने, और उसे आगे बढ़ाने की ओर लेकर आया जाए।

कक्षा में मैंने जिन मुख्य बिन्दुओं / प्रतिफलों पर काम किया, वह निम्न हैं :

कही जा रही कविता को समझते हुए सुनना;

उसपर प्रतिक्रिया देना;

तुकान्त शब्दों का निर्माण करना;

किसी नई कविता का निर्माण करना;

अपने अनुभवों के आधार पर दी गई कविता को आगे बढ़ाना; और

चित्रों के आधार पर पात्र, घटनाओं, और कविता का अनुमान लगाना।

पूर्व आकलन

कक्षा शिक्षण के दौरान मैंने यह देखा और समझा कि बच्चे कई प्रकार की कविताएँ मौखिक रूप से बोलते हैं, और लयबद्धता से बाल सभा में भी सुनाते हैं। ये कविताएँ पाठ्यपुस्तक से इतर होती थीं। मैंने तब यह महसूस किया कि कविताएँ बच्चों के पढ़ना-लिखना सीखने में मदद करेंगी। कक्षा 3-5 के बच्चे पढ़ने-लिखने के विभिन्न स्तरों पर थे। क़रीब 30 फ़ीसदी बच्चे ही पढ़कर समझ पाते थे। क़रीब 40 फ़ीसदी बच्चे किसी कविता अथवा कहानी के आधार पर अपने अनुभव और अपनी बात साझा कर पाते थे। बाक़ी पढ़ना सीखने की प्रक्रिया में थे। इसी तरह, ऐसा कोई बच्चा नहीं था जो कविता के आधार पर उसमें नए चरण जोड़ पाता हो। एक बड़ी चुनौती यह भी थी कि विभिन्न ज़रूरतों वाले, और उन ज़्यादातर बच्चों के साथ कैसे काम किया जाए, जो अभी पढ़ना-लिखना सीख ही रहे हैं।

पूर्व तैयारी

कविता पर काम से पहले मैंने अलग-अलग प्रकार की तैयारी की। कविता से पढ़ना-लिखना सीखने के मौक़े बनाने के लिए पहले शब्दचित्र, कविता पोस्टर, वाक्य पट्टी, शब्द पट्टी, आदि का निर्माण किया। हर कविता को कक्षा में पढ़ाने से पहले मैंने ख़ुद कविता को न सिर्फ़ पढ़ा, बल्कि याद किया। एक शिक्षक के रूप में मुझे लगा कि यदि मुझे कविता मौखिक तौर पर याद नहीं होगी, तब न मैं मज़े से उसपर काम कर पाऊँगा न ही बच्चे कर पाएँगे। याद करने से कविता को हाव-भाव के साथ कर पाने में भी मदद मिलती है। कविता के हाव-भाव, किस लय में इसे किया जाए, इसपर भी मैंने सोचा और काम किया।

इसी तरह, मैंने यह भी सोचा कि कविता से बच्चों के किन अनुभवों पर, और किस प्रकार बात की जाए। यह भी कि वे सवाल कौन-से होंगे, जो बच्चों को अपने अनुभव साझा करने के मौक़े देंगे। मैंने इसके लिए, और कविता में नए चरण जोड़ने के लिए पूर्व तैयारी के रूप में भी सवाल बनाए।

इसके बाद तीन समूहों का निर्माण किया। पहले समूह में वे बच्चे थे जो शब्दों को हिज्जे करके पढ़ते थे, और दूसरे समूह में वे जो शब्दों और वाक्य को पढ़ते थे। तीसरे समूह में ऐसे बच्चे थे जो कविता पढ़कर समझ लेते थे, लेकिन न अपने अनुभव जोड़ पाते थे न ही उसे अपने शब्दों में बता पाते थे।

सामान्य प्रक्रिया

मैंने सभी कविताएँ हाव-भाव के साथ गाईं, और बच्चों ने भी मेरे साथ गाया। इस वक़्त सभी समूह एक साथ ही बैठे। हर कविता पर बच्चों से बातचीत की गई, और उनके अनुभवों को जाना गया। मसलन, आपने किन-किन जानवरों को देखा है; जंगली और पालतू जानवरों के बारे में बातचीत; क्या आपके घर कोई पालतू जानवर है; उसके साथ का कोई अनुभव बताना; अलग-अलग जानवरों की आवाज़ों पर बातचीत करना; किसी एक जानवर की आवाज़ निकालकर सुनाना; जानवर क्या-क्या खाते हैं; आदि पर विस्तृत चर्चा की गई। इस दौरान मैंने यह सुनिश्चित किया कि सभी बच्चों को अपने-अपने अनुभव सुनाने के मौक़े मिलें। बच्चों को भी बारी-बारी से कविता को हाव-भाव के साथ करने के मौक़े दिए। यहाँ शुरुआत में कुछ बच्चे कविता को हाव-भाव से कर पा रहे थे, लेकिन कुछ नहीं कर पा रहे थे।

इस तैयारी के बाद पहला चरण पोस्टर के माध्यम से कविता के लिखित रूप को बच्चों के सामने प्रस्तुत करना था।

चरण 1

कविता पोस्टर के माध्यम से बच्चों का कविता के लिखित रूप से परिचय कराया गया। बच्चों के साथ कुछ सवालों पर भी बातचीत हुई। इस प्रक्रिया में मेरा प्रयास यह था कि बच्चों के साथ कविता के मौखिक रूप पर कुछ और काम करने के साथ ही कविता के प्रसंग से सम्बन्धित उनके अनुभवों को कक्षा में रखने का मौक़ा उन्हें दिया जाए। मैंने बच्चों के साथ नीचे तालिका में दिए गए कुछ सवालों पर चर्चा की जिनमें उन्हें भाषा विकास के अलग-अलग प्रकार के मौक़े मिले :

सवाल जिनपर चर्चा हुई	किस प्रकार का मौक़ा मिला
कविता किस बारे में है?	सूचनात्मक प्रश्न
क्या आपने हाथी देखा है? यदि हाँ, तो कहाँ? हाथी क्या-क्या खाता है?	अनुभव साझा करना, भाषा के इस्तेमाल के मौक़े
हाथी हमारे आसपास क्यों दिखाई नहीं देता है?	कारण सोचने के मौक़े देना
यदि हाथी हमारे गाँव में रहने लग जाएँ, तब क्या होगा?	अनुमान लगाना

चरण 2

इस चरण में मेरा प्रयास यह था कि मुख्य रूप से पढ़ना-लिखना सीख रहे बच्चों के साथ काम किया जाए। अब बच्चों ने कविता के मौखिक रूप को अच्छी तरह जान-पहचान लिया था, और उसकी लिपि को भी देख लिया था। मैंने पोस्टर पर उँगली रखकर बच्चों को कविता पढ़कर बताई, और इसके बाद बारी-बारी से बच्चों को उसे पढ़ने के मौक़े दिए। मैं यहाँ एक बात स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि बच्चे अभी वर्ण नहीं जानते थे, लेकिन वे कविता के वाक्यों और शब्दों को चित्र के रूप में पहचानने लगे थे। जब मैंने शुरुआत में इस प्रक्रिया पर काम शुरू किया, तब यह मुझे बहुत आश्चर्यजनक लगा था। बच्चे कविता के वाक्यों और शब्दों को पहचान पा रहे थे, यह देखकर मुझे एक सुखद अहसास हुआ। यहाँ इस बात पर ग़ौर करना ज़रूरी है कि बच्चे कविता के लिखित रूप की पहचान क्यों कर पा रहे थे। शायद इसलिए, क्योंकि बच्चों को कविता का मौखिक रूप याद था, और फिर अनुमान की सहायता से कविता के लिखित रूप एवं उसके क्रम को समझने में, मैं उनकी मदद कर रहा था।

चरण 3

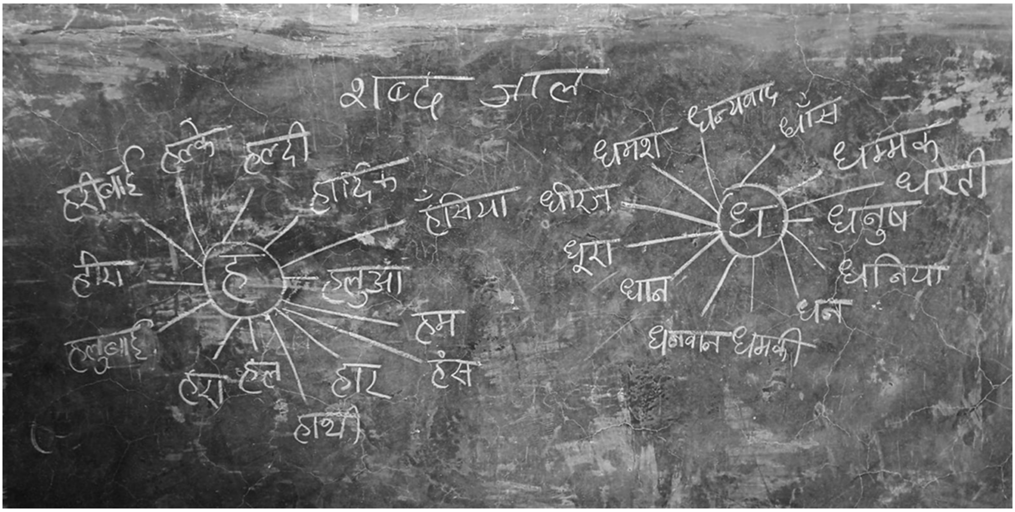
इस चरण में जो वाक्य पट्टी बनाई गई थी उसके साथ काम किया गया। कविता की अलग-अलग पंक्तियाँ चार्ट पेपर पर लिखकर उन्हें एक क्रम में जमाने के लिए बच्चों को दी गईं। इस दौरान एक बच्चा कविता पट्टी को जमा रहा था, और बाक़ी बच्चे पूरी कविता का मौखिक गायन कर रहे थे। यदि इस प्रक्रिया पर आप ध्यान दें, और सोचें कि बच्चे पट्टी क्यों जमा पा रहे थे, तो वही चीज़ें उनकी मदद कर रही थीं जो कविता के मौखिक रूप की पहचान करने में उनकी मदद कर रही थीं। कविता के क्रम और अनुमान की सहायता से बच्चे कविता की पट्टियों को एक क्रम में जमा रहे थे। इसमें मानो पिछली कुछ प्रक्रियाओं का दोहराव चल रहा था। इस प्रक्रिया के बाद मैंने शब्द पट्टी पर कार्य किया। इसमें बच्चों को कविता से जुड़े शब्दों को उसी क्रम में जमाना था, जिस क्रम में वे कविता में आए थे। इस पूरी प्रक्रिया में शुरुआत में बच्चों को परेशानी हुई, लेकिन दो दिनों तक काम करने के बाद बच्चे इसे ठीक से जमाने लगे। अब इस कविता से जुड़े शब्दों को बच्चे पहचानने लगे थे।

चरण 4

जैसा कि मैंने ऊपर कहा, प्रत्येक चरण पर कार्य करते हुए कुछ चीज़ें नियमित रूप से दोहराई जाती थीं। जैसे– कविता को गाना या हाव-भाव से करना, कविता के प्रसंग से जुड़े बिन्दुओं पर बातचीत करना, आदि।

यहाँ तक आते-आते बच्चे कविता को समझने और शब्दों व वाक्यों को पहचानने लगे थे। अब मुझे पढ़ने के डिकोडिंग वाले पहलुओं पर कार्य करना था। मैंने 'धम्मक धम्मक आता हाथी' कविता से हाथी, आता, जाता, पानी, धम्मक, आदि शब्दों का चुनाव करके उसपर कार्य करवाया। हाथी शब्द की पहली ध्वनि क्या है; 'ह' और 'हा' से क्या-क्या होता है; और इससे जुड़े शब्दजाल; आदि पर बच्चों के साथ काम किया। इसी तरह आता, जाता, पानी, आदि जैसे दूसरे शब्दों की पहली ध्वनि पर काम करवाया। यहाँ बच्चों को एक और बात स्पष्ट हुई कि एक वर्ण से केवल एक ही शब्द नहीं बनता। माने, 'ह' से केवल हाथी नहीं होता, हार भी होता है, हल भी, और हलवा भी होता है। मतलब, एक वर्ण व उसकी ध्वनि के कई सन्दर्भ बच्चों को मिले।

अगली प्रक्रिया में बच्चों को कविता के आधार पर चित्र बनाने के मौक़े दिए गए। हाथी जो-जो करता है, बच्चों ने उस प्रसंग से सम्बन्धित अपने अनुभव बताए। उन्होंने हाथी के नहाने, केला खाने, घूमने, आदि से सम्बन्धित चित्र भी बनाए। यदि आप यहाँ ग़ौर करें तो बच्चों ने यांत्रिक चित्र नहीं बनाए। जंगल में घूमते हुए हाथी का चित्र बनाना आमतौर पर



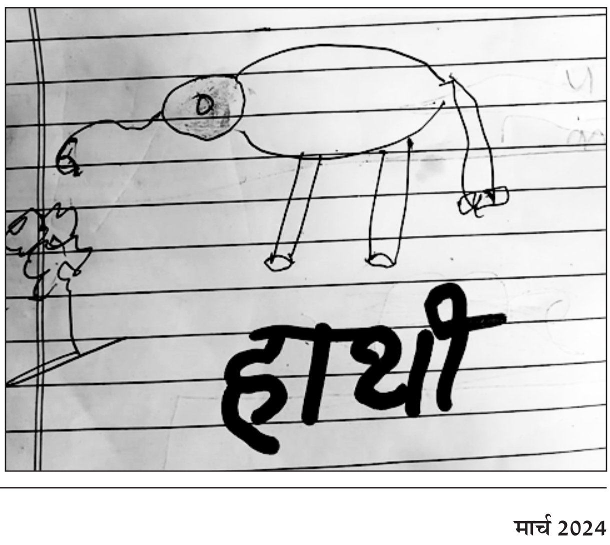
बनने वाले झण्डे, आम, घर, आदि के बनाए चित्रों से अलग है। साथ ही यहाँ बच्चों को सृजनात्मक अभिव्यक्ति की प्रक्रियाओं में भी शामिल होने का मौक़ा मिला।

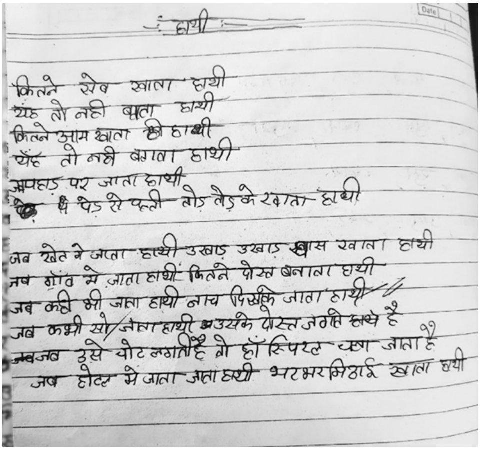
चरण 5

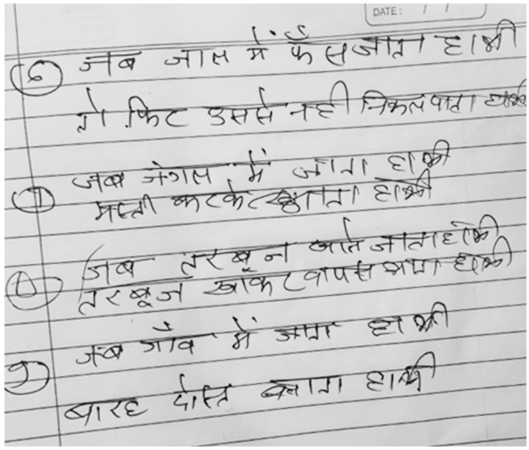
इस चरण में बच्चों के साथ कविता की तुकबन्दियों की पहचान और कविता में नए चरण जोड़ने पर काम किया गया। बच्चों को कविता में नए चरण जोड़ने को कहा गया। शुरुआत में बच्चों ने कहा कि उनसे नहीं होगा। इसके बाद मैंने ब्लैकबोर्ड पर उन कुछ चीज़ों की सूची बनाई कि हाथी क्या-क्या करता है। मसलन, वह खाता है, घूमता है, मदद करता है, खेलता है। अब बच्चों ने बताया कि हाथी जंगल जाता है, हाथी घास खाता है, गन्ना खाता है, तरबूज़ खाता है, छुपन-छुपाई खेलता है, नाचता है, आदि। इस तरह बच्चों ने कुछ व्यवहारिक और अपने अनुभव से जोड़कर कुछ काल्पनिक अभिव्यक्ति भी की।

इसके बाद भी बच्चे कविता में नया चरण नहीं जोड़ पा रहे थे। मैंने यहाँ बच्चों को एक हिंट दी– 'गन्ना पत्ती खाता हाथी, अपनी पूँछ हिलाता हाथी'। यह बच्चों को बेहद मज़ेदार लगा, और इसके बाद वे अपने-अपने समूहों में सोचने लगे। इस दौरान समूहों में, मैं उनकी मदद कर रहा था। बच्चों ने वाक्यों में अभिव्यक्ति की और उसे









लिखा। बच्चों ने बताया कि हाथी अपने दोस्तों के साथ घूमता है, मिलजुलकर खेलता है। यहाँ मैंने उन्हें कहा कि इसे कविता के चरण में बताओ। उन्होंने बताया, 'दोस्तों संग पत्ती खाता हाथी, मिलजुलकर खेल खेलता हाथी'।

अब बच्चों ने नीचे बताए अनुसार कविता में अलग-अलग चरण जोड़े :

क्र.सं.	बच्चों के द्वारा जोड़े नए चरण
01	जब पहाड़ पर जाता हाथी ख़ूब उछल-कूद मचाता हाथी
02	जब पहाड़ी से गिर जाता हाथी घर जाकर पट्टी बँधवाता हाथी
03	गाँव-गाँव में जाता हाथी मुतका अमरूद ले आता हाथी
04	जब जाल में फँस जाता हाथी तो फिर उससे नहीं निकल पाता हाथी
05	जब गाँव में जाता हाथी बारह दोस्त बनाता हाथी
06	जब कहीं भी जाता हाथी दाँत दिखाकर आता हाथी

बाद का आकलन और अपेक्षित परिणाम

मैंने इस तरह क़रीब 12 कविताओं पर काम किया। कविता पर काम करने से पहले जिन बच्चों को पढ़ने, मौखिक अभिव्यक्ति, और सोचने में चुनौती थी, उनके साथ कुछ हद तक काम हो सके हैं। 12 कविताओं और उनसे सम्बन्धित अनुभवों से निकलकर आए क़रीब 150 शब्दों पर काम हो सका। यहाँ बच्चे इन कविताओं और इनसे सम्बन्धित शब्दों को पहचानने लगे थे। इस दौरान, कविता के शब्दों से निकलकर आए कई वर्णों पर भी बच्चों के साथ काम किया।

दूसरे और तीसरे समूह के बच्चों को कविता के आधार पर सोचने, नई तुकबन्दियाँ बनाने, और कविता में नए चरण जोड़ने के मौक़े मिले। बच्चों ने कई कविताओं में नए चरण जोड़े। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान बच्चों ने पाठ्यपुस्तक की कविताओं पर भी काम किया। जो बच्चे पहले पढ़ नहीं पाते थे, अब पढ़ने की शुरुआत करने लगे। माने, बच्चे पुस्तकालय और *बरखा* सीरीज़ की शुरुआती स्तर की पुस्तकों को पढ़ने लगे और उनपर कक्षा में बातचीत करने लगे थे।

क़रीब 30 फ़ीसदी बच्चों, जिन्हें पढ़ना सीखने में मुश्किल आती थी, ने पढ़ने की शुरुआत की। कविता पर कार्य करते हुए यह बेहद सुखद अहसास था।

चुनौतियाँ एवं समझ

इस प्रक्रिया में, मैं यह समझ पाया कि बच्चों के साथ भाषा पर समग्रता में और अर्थ वाली कविता-कहानी के साथ काम किया जाना

चाहिए। पहली बात, कोई भी भाषा, चाहे वह हमारे परिवेश की ही क्यों न हो, हम समग्रता में ही सीखते हैं। दूसरी बात, बच्चों के साथ विभिन्न समूहों में उनकी ज़रूरतों के मुताबिक़ काम किया जाना चाहिए। हालाँकि, यह चुनौतीपूर्ण होता है, लेकिन यदि शिक्षक को यह पता है कि अलग-अलग ज़रूरतों वाले बच्चों को उद्देश्यपूर्ण ढंग से किस तरह शामिल करना है, यह काम आसान हो जाता है। जैसे– जब बच्चे कविता में नए चरण जोड़ रहे थे, तब विभिन्न समूहों में वे बच्चे भी शामिल थे जो लिख नहीं सकते थे, लेकिन उन्होंने नए चरण बनाने में मौखिक रूप से दूसरे बच्चों की मदद की।

तीसरी बात, जहाँ बच्चों को सोचने के मौक़े देने हैं वहाँ एक शिक्षक के रूप में मैं उन्हें उत्तर बताने से बचूँ। जैसे– जब बच्चे कविता में नए चरण जोड़ रहे थे, मैंने उन्हें हिंट देकर आगे स्वयं से सोचने हेतु प्रेरित किया। इसके बाद बच्चों ने समूह में कविता में कई सारे नए चरण शामिल किए। चौथी बात, एक शिक्षक के रूप में धैर्य रखना बेहद ज़रूरी होता है। जैसे– जब कुछ बच्चे कविता के मौखिक और लिखित रूप को शुरुआत में नहीं पहचान पा रहे थे, मैं यह समझ सका कि यहाँ इस बच्चे को कविता के मौखिक रूप की समझ नहीं है। इसलिए उसपर पहले काम किया।

आगे की योजना

कविता पर इस तरह की प्रक्रिया के बाद, बच्चों के साथ कविता में अर्थ पर कैसे काम करें, इसपर आगे की प्रक्रिया करनी है। कविता पर काम करने के बाद, बच्चों के साथ कहानी शिक्षण की प्रक्रिया पर कैसे काम किए जाएँ, इसपर योजनाबद्ध तरीक़े से काम की योजना है।

ओमप्रकाश विश्वकर्मा शासकीय प्राथमिक शाला, भूसा विकासखण्ड, खुरई, सागर पदस्थ हैं। वे पिछले 17 वर्षों से प्राथमिक शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। साथ ही विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षणों में प्रशिक्षक के रूप में भी योगदान देते हैं। इनकी रुचि बाल साहित्य को पढ़ने-समझने में है।

सम्पर्क : opv32511@gmail.com